IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा के परिपेक्ष्य में महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन

डॉ. विनय कुमार

सहायक प्राध्यापक

दर्शनशास्त्र विभाग

टी.पी.कालेज, मधेपुरा।

सारांश:

यह शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में समाहित नैतिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक तथा सामाजिक मूल्यों के साथ महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन के अंतर्संबंधों एवं उनकी वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन प्रस्तुत करता है। महात्मा गांधी एक महान चिंतक, शिक्षाविद् और सामाजिक सुधार थे। जिन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा की मूलभूत अवधारणाओं यथा- सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, आत्मानुशासन, सेवा, सह-अस्तित्व आदि को अपने शैक्षिक दर्शन की आधारशिला बनाया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया है। इस शोध का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा की शैक्षिक दृष्टि और महात्मा गांधी के शैक्षिक सिद्धांत के बीच गहन सामंजस्य को स्थापित करना है। यह अध्ययन दर्शाता है कि किस प्रकार गांधी ने भारतीय संस्कृति की आत्मा को शिक्षा के माध्यम से पुनर्जीवित करने का प्रयास किया, उनकी बुनियादी शिक्षा पद्धति आज भी समग्र एवं मूल्यपरक शिक्षा के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। यह शोध निष्कर्ष देता है कि वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में गांधी की शैक्षिक विचारधारा को अपनाना नैतिक, मानवीय तथा सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कीवर्ड:

भारतीय ज्ञान परंपरा, महात्मा गांधी, शैक्षिक दर्शन, नैतिक मूल्य, बुनियादी शिक्षा, समग्र शिक्षा, अहिंसा, सत्य, आत्मनिर्भरता, प्रासंगिकता।

प्रस्तावना :

भारतीय ज्ञान परंपरा में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षितिज के साथ नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर प्रकाश डाला गया है। महात्मा गांधी एक महान चिंतक और शैक्षिक सुधारक थे। वे शिक्षा को सामाजिक विकास और सामाजिक पुनर्निर्माण की एक शक्तिशाली शक्ति मानते थे। गांधी के विचार में शिक्षा का उद्देश्य अहिंसक और गैर-शोषण वाली सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना है। महात्मा गांधी का मानना था कि "शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो केवल सामाजिक प्रगति के लिए नहीं, बल्कि नैतिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास के लिए भी जरूरी है।" इस प्रकार शिक्षा वह है जो बच्चों और बड़ों के शरीर, मन और आत्मा में निहित श्रेष्ठ गुणों का सर्वांगीण विकास करे। शिक्षा का अर्थ मात्र साक्षर करना या होना नहीं है, अपितु व्यक्ति का पूर्ण विकास है। गांधीवादी सिद्धांतों और मूल्य व्यवस्था ने एक समय पूरे भारत को एक सूत्र में बाँध दिया। इस मूल्य व्यवस्था ने राष्ट्र, सत्य, अहिंसा और सेवा के सिद्धांत दिए, जो हम सभी के हृदयों में बसा हुआ है। गांधी के शिक्षा पद्धति शिल्प उन्मुखी है। इसमें हस्तकला महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व नैतिक अधिकारों और मूल्यों का ह्रास हो रहा है और उनका शोषण किया जा रहा है। विकास की प्रक्रिया में हमें इन समस्याओं पर विचार करना होगा और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार समाधान खोजना होगा। आज इन समस्याओं के समाधान में हमें गांधीवादी शिक्षा का अनुसरण करना चाहिए। महात्मा गांधी सत्य, अहिंसा, सामानता, न्याय और विश्वबंधुत्व पर आधारित समाज की स्थापना करना चाहते थे। सार्वभौमिक और अनिवार्य शिक्षा में गांधी का विश्वास था, जिसके अंतर्गत मातृभाषा पर विशेष बल दिया गया है। अतः यह एक व्यावहारिक दृष्टिकोण वाला दर्शन है।

महात्मा गांधी का दार्शनिक विचार:

महात्मा गांधी का दर्शन राजनीतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक क्षेत्र के साथ-साथ व्यक्ति के जीवन को भी प्रकाशित करता है। उनका दर्शन जीवन का संदेश और दर्शन है। उनका उद्देश्य भारत का पुनर्निर्माण नीचे से ऊपर की ओर करना था, जिसमें भारत के असंख्य गाँव आधार बने तथा जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था विकेन्द्रीकृत हो। वे गरीबों, वंचितों और शोषित लोगों के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे तथा समाज के बुरी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को बदलना चाहते थे। गांधी विश्व में सत्य, अहिंसा, प्रेम, स्वतंत्रता, सहिष्णुता और शांति के महान सिद्धांत, दार्शनिक तथा व्यवहारकर्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा व्यवस्था :

महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली को "बुनियादी शिक्षा" कहा गया है। उन्होंने मुख्य रूप से मातृभाषा में शिक्षा देने पर जोर दिये हैं और शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों को कुशल और आत्मनिर्भर बनाये। सामाजिक विषमताओं के रहते हुए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करना और शिक्षा के साधन जुटाना आज का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। ऋग्वेद में शिक्षा के संदर्भ में कहा गया है कि "शिक्षा वह है जो व्यक्ति को नि:स्वार्थी और आत्मनिर्भर बनाये।'' कौटिल्य का भी मानना था कि शिक्षा देश और देश हित में होनी चाहिए। गांधी के अनुसार "शिक्षा का अर्थ बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''गांधी की शिक्षा का केंद्र बिंदु हाथ से किया गया काम है। इससे ऐसी वस्तुओं का निर्माण होता है जिसे बाजार में बेचा जाता है। इस काम से बच्चों को काम में दक्षता प्राप्त होता है तथा साथ ही आर्थिक लाभ भी मिलता है। ऐसी शिक्षा से बच्चे आगे चलकर आत्मनिर्भर बन जाते हैं और आज ऐसी ही शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। जब तक बच्चों को रोजगारमुखी, स्वावलम्बन, नैतिकता, मानवता आदि की शिक्षा नहीं दी जाये तब बच्चे का विकास संभव नहीं है। गाँधी ने कहा था कि "मनुष्य न कोरी बुद्धि है, न स्थूल शरीर है और न

केवल आत्मा है अपितु तीनों का सम्मिश्रण है।'' इसलिए शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति के शरीर, बुद्धि और आत्मा तीनों का विकास करे। कहने का अर्थ है कि शिक्षा में हस्तकला ज्ञान, रोजगार परक ज्ञान और आध्यात्मिकता हो। अक्षर ज्ञान शिक्षा का मात्र एक साधन है, यह लक्ष्य नहीं होना चाहिए। शिक्षा प्रयोगात्मक होना चाहिए, इससे ही मस्तिष्क का उच्चतम विकास संभव है।

आज गाँधी की शिक्षा पहले से भी अधिक प्रासंगिक है क्योंकि आज लोग बढ़ते बेरोजगारी, व्यापक हिंसा और उपभोक्तावादी जीवनशैली की समस्याओं का समाधान खोज रहे हैं। मातृभाषा में दी गई शिक्षा हमारी भारतीय संस्कृति-सभ्यता को मजबूत बनाती है, संयुक्त परिवार बनाती है, राष्ट्र की एकता को मजबूत बनाती है जबकि विदेशी भाषा में दी गई शिक्षा में इन सभी बातों की कमी है। विदेशी भाषाओं ने बच्चों को रटने वाला और नकल करने वाला बना दिया है जिससे वे मौलिक कार्य और मौलिक चिंतन से दूर हो गये हैं। शिक्षा सिर्फ साक्षरता नहीं है। बच्चों को किसी उपयोगी हस्तकला की शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे भारत में विद्यालयी ज्ञान के सामाजिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन आयेगा। गाँधीवादी शिक्षा से मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होगा। गांधी के अनुसार मस्तिष्क, हृदय और आत्मा का वास्तविक विकास एक संतोषजनक शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक है। ऐसी व्यवस्था से छोटे और आत्मनिर्भर समुदायों का निर्माण होगा। गांधी का मानना था कि विद्यालय घर का विस्तार रूप है। इसलिए बच्चे को घर और विद्यालय से मिलने वाले संस्कारों में सामंजस्य होना चाहिए। तभी सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अन्तर्गत ही महात्मा गाँधी शिक्षा दर्शन भी आता है। गाँधी ने 1937 में अपनी पत्रिका हरिजन में लिखे कि "भारतवर्ष में बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा दृढ़तापूर्वक लागू किया जाय।'' यह जब तो नहीं लेकिन आज भारतवर्ष में लागू है। गाँधी के शिक्षा नीति में यह अनिवार्य है कि बच्चों को कोई उपयोगी उद्योग सिखायें और उसके द्वारा उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास सिद्ध करें। इनका यह विचार व सिद्धांत आज की नई शिक्षा नीति 2020 में लागू किया जा रहा है। इससे गाँवों में लगातार बढ़ रहे अवरोध व बेरोजगारी की प्रक्रिया रुकेगी और ऐसी न्यायपूर्ण समाज व्यवस्था की नींव पड़ेगी, जिसमें अमीरों और गरीबों के अस्वाभाविक विभेद कम होगी। तथा प्रत्येक व्यक्ति को जीवन, मजदूरी और स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त होंगे। सिर्फ अक्षर ज्ञान से जीवन सार्थक नहीं हो सकता है। गाँधी कहते हैं "शिल्प, कला, स्वास्थ्य और शिक्षा सभी को एक योजना में समन्वित कर देना चाहिए। शिल्प और उद्योग को शिक्षा से भिन्न न समझ कर इन्हें शिक्षा का माध्यम माने।'' यदि सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करना हो तो बच्चों को घर और विद्यालय दोनों से मिलने वाले संस्कार में सामंजस्य होना चाहिए। विदेशी भाषा के माध्यम से प्राप्त शिक्षा हमारी सामंजस्य को नष्ट कर देती है। जो लोग मातृ सामंजस्य को तोड़ते हैं, वह जनता के शत्रु है, चाहे उनके उद्देश्य ईमानदार ही क्यों ना हो। इस शिक्षा व्यवस्था के स्वेच्छा से शिकार बनना अपनी माताओं के प्रति कर्तव्य से विश्वास करने के समान है। विदेशी शिक्षा से होने वाली अहित जीवन भर जारी रहता है। विदेशी शिक्षा शिक्षित वर्ग और जनसामान्य के बीच एक गहरी खाई उत्पन्न कर दी है।

गाँधीवादी दर्शन में शिक्षा के उद्देश्य :

गाँधी आदर्शवादी और यथार्थवादी दोनों थे, यही कारण है कि वे शिक्षा के अंतिम और तात्कालिक दोनों उद्देश्यों को स्वीकार करते हैं। आत्म-साक्षात्कार, अध्यात्म और ईश्वर के साथ एकात्म शिक्षा का मूल उद्देश्य है। गाँधी धार्मिक शिक्षा पर विशेष जोर देते हैं। शिक्षा के तात्कालिक उद्देश्यों में गाँधी उपयोगितावादी उद्देश्य, सांस्कृतिक उद्देश्य तथा व्यक्तित्व के सामंजस्यपूर्ण विकास को मानते हैं। गाँधी शिक्षा में जीवन का सम्पूर्ण विकास, चरित्र निर्माण तथा उत्तम नागरिकता का प्रशिक्षण भी शामिल है। गाँधी के शैक्षिक दर्शन के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

① प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य होनी चाहिए।

② शिक्षा शिल्प केंद्रित होनी चाहिए।

③ शिक्षा आत्मनिर्भर और स्वावलंबी होनी चाहिए।

④ शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए।

बुनियादी शिक्षा की अवधारणा :

महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा एक शिक्षा योजना है। इसका उद्देश्य भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का पुनर्निर्माण करना था। इस शिक्षा योजना को "नई तालीम या वर्धा शिक्षा योजना" भी कहा जाता है। व्यावहारिक रूप से जब हम देखते हैं तो पाते हैं कि बुनियादी शिक्षा एक शैक्षिक दर्शन है। यह देश के लोगों की सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और आर्थिक आवश्यकताओं पर आधारित है। बुनियादी शिक्षा को परिभाषित करते हुए गांधी कहते हैं कि "बुनियादी शिक्षा जीवन के लिए और जीवन के माध्यम से शिक्षा दी है।'' बुनियादी शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधारभूत संरचना है। यह सम्पूर्ण शिक्षा योजना की नींव है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गाँधी की बुनियादी शिक्षा वास्तव में शिक्षा की मूल अवधारणा है। इसके निम्न बिन्दु इस प्रकार हैं–

① यह एक सामान्य बच्चों द्वारा प्राप्त की जाने वाली न्यूनतम शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करती है।

② यह मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सीधे जुड़ी हुई है।

③ यह मुख्यतः बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं से संबंधित है।

④ यह बच्चों की जन्मजात क्षमताओं का उपयोग करती है।

⑤ यह समुदाय के मूल व्यवसायों से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।

गाँधीवादी शिक्षा के पीछे का दर्शन :

गाँधी अपने जीवन-दृष्टि के आधार पर बुनियादी शिक्षा योजना विकसित की है। उनकी शिक्षा योजना कुछ मौलिक विचारों पर आधारित है, यथा –

① वर्गविहीन समाज का आदर्श।

② सभी के लिए स्वतंत्रता और समानता।

③ श्रम की गरिमा।

④ अहिंसक सामाजिक व्यवस्था।

⑤ सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास।औ

निष्कर्ष :

महात्मा गाँधी के शिक्षा योजना भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप है। गाँधीवादी दर्शन केवल राजनीतिक या धार्मिक नहीं है। यह पारंपरिक और आधुनिक का सामंजस्य है। भारतीय संस्कृति और विरासत सन्निहित होने के कारण गाँधीवादी शैक्षिक दर्शन ने पूरे देश के नैतिक और आचारिक मूल्यों को अमिट बनाया है। गाँधी के विचारों की बहुआयामी प्रकृति उनके शैक्षिक विचारों को अपने समय से आगे स्थापित किया है। गाँधी अपने शैक्षिक योजना वर्तमान और भविष्य के सामाजिक जीवन की सभी आवश्यकताओं को सम्मिलित किये हैं। इन कारणों से गाँधीवादी शिक्षा-दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ आज के सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में भी महत्व रखता है।

संदर्भ सूची:

1. बाली, डी. आर. (1989): **दर्शन का परिचय**, स्टारलिंग पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. धवन, गोपीनाथ (1957): **महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन**, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद।
3. घोष, पी. सी. (1968): **महात्मा गांधी: जैसा मैंने उन्हें देखा**, एस. चाँद एंड कंपनी, नई दिल्ली।
4. कुमार, वी. (2007): **गांधी: व्यक्ति, उनका जीवन और उनका दृष्टिकोण**, रीगल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. **द हिन्दू**: *महात्मा गांधी की प्रासंगिकता*, 7 दिसंबर, 2010।
6. उपाध्याय, ए. एवं बरुआ, एन. के. (2014): **गांधीवादी दार्शनिक विचार तथा भारतीय वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर उसका प्रभाव**, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, असम।
7. हरिजन - 31.7. 1937, पृष्ठ संख्या 197.
8. हरिजन- 8. 9. 1946, पृष्ठ संख्या 306.
9. हरिजन - 9. 11. 1947, पृष्ठ संख्या 401.
10. हरिजन- 9. 7.1938, पृष्ठ संख्या 177.